

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५०

राजदेव मण्डल : मैथिली लेखक

कृतित्व आ समानान्तर इतिहास

कविता, उपन्यास आ कथा

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५०

राजदेव मण्डल : मैथिली लेखक

काव्य, उपन्यास, कथा आ समानान्तर इतिहासक पुनर्परीक्षण

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

अध्ययनक मुख्य स्रोत दू संलग्न फाइल अछि: “1_Rajdeo.docx”मे ग्रन्थक शीर्षक-पृष्ठ, प्रकाशकीय विवरण आ अनुक्रम; “2_Rajdeo.doc”मे ११२ पृष्ठक अंग्रेजी आलोचनात्मक मूल सामग्री अछि। दोसर फाइलकें पाठ-परीक्षण लेल सामान्य Word संरचनामे पढ़ल गेल, मूल स्रोत परिवर्तित नहि कएल गेल।

पुस्तकक तीन मुख्य विभाग राजदेव मण्डलक कविता-उपन्यास-कथा, समानान्तर मैथिली साहित्यक प्रस्तावना आ जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमन-पश्च साहित्य-परिदृश्यक प्रस्तुति छथि। एहिसँ पुस्तक केवल साहित्यिक व्यक्तिक परिचय नहि, एक व्यापक समानान्तर इतिहास-पक्षधर तर्क बनैत अछि।

समीक्षा मूल लेखक द्वारा उद्धृत ऐतिहासिक घटनासभकें स्वतः निष्पक्ष प्रमाण नहि मानैत अछि। पक्षधर वाक्य, स्रोत-आधारित तथ्य, व्याख्यात्मक अनुमान आ मूल्य-विधानक अन्तर स्पष्ट कयल गेल अछि।

अध्ययनक मूल अनुक्रम

- 01 — राजदेव मण्डलक कृतित्व-परिचयक आलोचनात्मक ढाँचा
- 02 — कवि राजदेव मण्डल आ ‘अम्बरा’क काव्य-स्वर
- 03 — उपन्यासकारक मूल्याङ्कन : कथा-रूपक स्वतन्त्रता
- 04 — कथाकार राजदेव मण्डल : पाँच चयनित कथाक प्रश्न
- 05 — विदेह आन्दोलन आ साहित्यिक संस्था-विमर्श
- 06 — पहिल परिशिष्ट : समानान्तर मैथिली साहित्य-इतिहासक प्रस्तावना
- 07 — दोसर परिशिष्ट : जगदीश प्रसाद मण्डल आ साहित्यिक मोड़
- 08 — भाषा, अनुवाद आ अंग्रेजी पाठकक ऐतिहासिक दूरी

01 राजदेव मण्डलक कृतित्व-परिचयक आलोचनात्मक ढाँचा

“Rajdeo Mandal: Maithili Writer”क मुख्य शीर्षक राजदेव मण्डलक कवि, उपन्यासकार आ कथाकार तीनू रूपमे रखैत अछि। मुख्य ग्रन्थमे परिचयक पहिले “Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement”क प्रसङ्ग आने साहित्यिक व्यक्तित्वकें एका बौद्धिक आन्दोलनक भीतर स्थान देल गेल अछि। ई संरचनात्मक चुनाव महत्त्वपूर्ण अछि: पुस्तक निष्पक्ष जीवनी लिखबाक अपेक्षा समानान्तर धारा भीतर कृतित्वक पुनर्मूल्याङ्कन करैत अछि।

एहि दावाक मूल्यांकन करैत लेखक-सम्बन्धी प्रमाणित प्रकाशन-वर्ष, उपलब्ध कृति, पाठ-उद्धरण आ ऐतिहासिक प्रसंग अलग राखब आवश्यक अछि। संस्थागत उपेक्षाक प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओकर उत्तर हेतु चयनित कथासभक सौन्दर्यगत परीक्षण ततेकहि अनिवार्य अछि। अध्ययन साहित्यिक उपलब्धि आ आन्दोलनक समर्थनक बीच जे भेद अपेक्षित अछि, तकरा मान्यता देबैत अछि।

02 कवि राजदेव मण्डल आ 'अम्बरा'क काव्य-स्वर

मूल पुस्तकक “Rajdeo Mandal—The Poet, The Novelist” विभागमे ‘Ambara’ कविता-सङ्ग्रहक आंशिक अंग्रेजी उदाहरण उपस्थित अछि, जाहिमे ‘The constant shedding of Tears’ सन भावक प्रवेश होइत अछि। कविता पढ़ैत अनुवादक वा आलोचकक अपन भाषा आ मूल मैथिली पदक अन्तर सहज नहि मिटैत। काव्यगत मूल्य आँसू वा करुणाक विषयमे मात्र नहि, आन्तरिक लय, लोक-बिम्ब आ कथनक सूक्ष्म अनिश्चिततामे खोजल जाय।

अंग्रेजी आलोचनामे मैथिली काव्यक साहित्येतिहासक सामान्यीकरण पाठककें दिशाबोध दैत अछि; तथापि ‘समानान्तर’ शब्द मात्रसँ कविताक विशिष्ट प्रयोग सिद्ध नहि होइत। मूल पद्यक स्वतंत्र पाँति, संग्रहक पूरा क्रम आ प्रथम प्रकाशन विवरण एकत्र भेलापर रचनावार निष्कर्ष अधिक सुदृढ़ बनत।

03 उपन्यासकारक मूल्याङ्कन : कथा-रूपक स्वतन्त्रता

राजदेव मण्डलक उपन्यासक परिचयकेँ साहित्यिक आन्दोलनक घोषणासँ अलग करबाक आवश्यकता अछि। उपन्यासक समय-विस्तार, पात्रक स्वतन्त्र निर्णय, संवादक स्तर, ग्राम्य वा आधुनिक परिवेशक पुनर्निर्माण आ अन्तिम दृश्यक सौन्दर्य—ई कृतिक स्वतन्त्र मानदण्ड छथि। एहि कसौटीक अभावमे सामाजिक पक्षधरता मात्र उपन्यासक प्राप्ति बनि जाइत अछि।

मूल अंग्रेजी पुस्तकमे राजनीतिक-सांस्कृतिक इतिहासक अनेक टिप्पणी कृतिक परिचयक संग जुड़ल अछि। एक साहित्यिक समीक्षाकेँ पूछबाक अछि जे लेखक-समाजक जड़ता चरित्रमे उतरैत अछि कि लेखकक प्रत्यक्ष व्याख्या बनि रहैत अछि। पाठ उपलब्ध रहल स्थानपर घटना-क्रमक वास्तविक उदाहरण बनाम आलोचकक अनुमानक भेद सुरक्षित राखब जरूरी अछि।

04 कथाकार राजदेव मण्डल : पाँच चयनित कथाक प्रश्न

पुस्तकक “Rajdeo Mandal—The Fiction Writer” विभागक अन्तर्गत पाँच चयनित कथाक चर्चा अछि। चयनक आधार कोन कविक अथवा कथाकारक परामर्शसँ निश्चित भेल, ओकर पारदर्शिता आलोचनाक भाग बनबाक चाही। पाँच प्रतिनिधि कथा सम्पूर्ण रचना-संसारक स्थान नहि लेत; ओ किछु शिल्पगत सम्भावना चिन्हैत अछि।

कथा-पाठमे वक्ता, घटना, पात्रक अनकहल इच्छा आ ग्रामीण वर्ग-संबंधक वास्तविक विशेषता जाँचि कथाकारक योगदान निर्धारण होयत। चयनक कसौटी आ कृति-प्रमाण प्रस्तुत कएल गेलापर ‘नव कथा’ सन मूल्याङ्कन साहित्यिक इतिहासमे अधिक उपयोगी होयत।

05 विदेह आन्दोलन आ साहित्यिक संस्था-विमर्श

राजदेव मण्डल सम्बन्धी पुस्तकक आरम्भिक अंग्रेजी आलेख सार्वजनिक साहित्यिक संस्थासभक चयन-प्रणाली, प्रतिनिधित्व आ अनुवादक गुणवत्तापर तीक्ष्ण प्रश्न उठबैत अछि। एहि आलोचनाक ऐतिहासिक महत्त्व लोकतान्त्रिक प्रतिनिधित्व आ साहित्यिक पहुँचक मागमे अछि। मुदा नामोल्लेखित व्यक्तिसभक योग्यता, नीयत अथवा अनुवाद-निष्ठा सम्बन्धी निर्णय स्रोतक पक्षधर मत छथि, स्वतन्त्र निष्पक्ष प्रमाण नहि।

एहि कारण समीक्षा संस्थागत सार्वजनिक सूचना, पुरस्कारक निर्णय-विधि, उपलब्ध अनुवाद-पाठ आ प्रतिपक्षक उत्तर पबिते निश्चित ऐतिहासिक निष्कर्ष लएबाक आग्रह करैत अछि। व्यक्तिपर केन्द्रित अनुमान आ साहित्यिक तर्क अलग कएलापर पुस्तकक मुख्य सामाजिक प्रश्न अधिक मजबूत होइत अछि।

06 पहिल परिशिष्ट : समानान्तर मैथिली साहित्य- इतिहासक प्रस्तावना

पहिल परिशिष्ट “A Parallel History of Maithili Literature—

Introduction” साहित्यिक इतिहासक एकरेखीय विकासक बदला

बहुपरम्परागत इतिहास लिखबाक प्रतिज्ञा दैत अछि। आधिकारिक संस्था
अथवा प्रतिष्ठित आलोचना बनाम वैकल्पिक अभिलेखक विरोध मात्र
इतिहासक पद्धति नहि; पुरान पत्रिका, मूल रचनाक तिथि, लिपि, डिजिटल
प्रकाशन आ लेखकक प्रत्यक्ष साक्ष्य मिलाएल जाय।

ऐतिहासिक समानान्तरता जँ प्रमाणित स्रोतक नवीन अवस्थान देखबैत अछि,
तँ ई उपेक्षित लेखककें साहित्येतिहासमे स्थान दऽ सकैत अछि। मुदा वैकल्पिक
इतिहासक दावाकें सेहो आलोचनाक ओही जाँच सँ गुजरबाक चाही जे स्थापित
इतिहासपर लागू होइत अछि: स्रोतक तिथि, पाठभेद, प्रतिनिधित्व आ
संशोधनीयता।

07 दोसर परिशिष्ट : जगदीश प्रसाद मण्डल आ साहित्यिक मोड़

“Era Before and After—Literary Scene in Maithili after the Arrival of Jagdish Prasad Mandal” नामक दोसर परिशिष्ट एक लेखकक आगमनकेँ साहित्यिक काल-विभाजनक प्रस्ताव रूपमे रखैत अछि। लेखक-विशेषक कृतित्वक सामाजिक आलोचना मूल्यवान होएब सम्भव अछि, मुदा साहित्य-इतिहासमे ‘पूर्व’ आ ‘उत्तर’क युग-रेखा खींचबाक लेल अन्य समकालीन लेखकसभक तुलना आ प्रकाशन-तिथिक अध्ययन आवश्यक अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक पात्रसभक आर्थिक पराजय अथवा सामाजिक संघर्ष सम्बन्धी मूल पुस्तकक टिप्पणी महत्वपूर्ण पाठ-प्रश्न उठबैत अछि। कथा-कथानककेँ पहले निश्चित कऽ, आ तकर बाद सामाजिक व्याख्या प्रस्तुत कऽ इतिहासक निष्कर्ष बनाओल जाय; सामान्य महिमा-मण्डनबाट बचल जाय।

08 भाषा, अनुवाद आ अंग्रेजी पाठकक ऐतिहासिक दूरी

ई पुस्तक अंग्रेजीमे गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक प्रस्तुति अछि। अंग्रेजी भाषा गैर-मैथिली पाठकधरि विवाद, कविताक अनुवाद आ वैकल्पिक इतिहासक तर्क पहुँचबैत अछि, मुदा मूल मैथिली पदक ध्वनि आ क्षेत्रीयता सँ दूरी सेहो उत्पन्न करैत अछि। अंग्रेजी शब्द “parallel”क सामान्य अर्थ आ विदेह आन्दोलनक विशिष्ट अर्थकें अलग स्पष्ट करब उचित अछि।

आलोचनाक विश्वसनीय संस्करणमे मूल मैथिली उद्धरण, स्रोत-ग्रन्थक सटीक पृष्ठ, अंग्रेजी अनुवादक श्रेय आ तिथिक व्यवस्थित पञ्जी जोड़बाक आवश्यकता अछि। एहि प्रक्रिया बिना अनुवादित परिचय एक वैचारिक परिचर्चा तऽ रहत, मुदा पूर्ण संशोधनीय शोधग्रन्थक स्तरपर अभी प्रमाणगत चुनौती बनी रहत।

समग्र मूल्याङ्कन

राजदेव मण्डलक साहित्यिक मूल्यांकनक विदेह आन्दोलनक साहित्येतिहाससँ जोड़बाक प्रयास एहि पुस्तकक मूल उपलब्धि अछि। काव्य, उपन्यास आ कथा केवल भाषिक कला नहि, जन-जीवनक अभिलेख बनि सकैत अछि—पुस्तक एहि सम्बन्धपर निरन्तर बल दैत अछि।

एहि उपलब्धिक संग अपूर्णता सेहो अछि। साहित्यिक व्यक्तित्वक वास्तविक बहुविध मूल्यांकन लेल कृतिक स्वतन्त्र पाठक आवश्यकता अछि; संस्थागत इतिहासक आरोप-प्रत्यारोप लेल परस्पर साक्ष्य, कालक्रम आ प्रतिपक्ष आवश्यक अछि। साहित्यक स्तुति आ ऐतिहासिक प्रमाणक समान अधिकार नहि।

तीनू विभागक आलोचनात्मक पुनर्परीक्षणसँ स्पष्ट होइत अछि जे समानान्तर साहित्य-इतिहासक भविष्य आन्दोलनक घोषणासँ बेसी पाठ-पज्जी, प्राथमिक प्रकाशन, अनुवाद-साम्य आ पुनःजाँच योग्य प्रमाणपर निर्भर अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। Rajdeo Mandal: Maithili Writer (Poet, Novelist and Short-Story Writer), with Supplement One and Two। संलग्न मूल Microsoft Word संस्करण; प्रकाशन-विवरण आ सम्पूर्ण समीक्षात्मक पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५०

राजदेव मण्डलक काव्य, उपन्यास आ कथाक
अंग्रेजी समीक्षाक गहन पुनर्परीक्षण;
मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास
आ जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक
भूमिकापर प्रमाणगत विवेचन।

विदेहक मूल साहित्यिक अभिलेख



www.videha.co.in



GitHub Videha Archive

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

छओ बाइ नौ इञ्च — विदेह